आरती कैलाशवासी शिव जी की

शीश गंग अर्धंग पार्वती, सदा विराजत कैलासी ।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं, धरत ध्यान सुर सुखरासी ।।

शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहै, बैठे हैं शिव अविनाशी ।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर, राग रागिनी मधुरासी ।।

यक्ष रक्ष भैरव जंह डोलत, बोलत हैं बनके वासी ।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुन्जासी ।।

कल्प द्रुम अरु पारजित, तरु लाग रहें है लाक्षासी ।
कामधेनु कोटिन जंह डोलत करत दुग्ध की वर्षा सी ।।

सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त सम हिमराशी ।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित, सेवत सदा प्रकृति दासी ।।

ऋषि मुनि देव दनुजनि नित सेवत, गान करत श्रुति गुणराशी ।
ब्रह्मा विष्णु निहारत निसदिन, कछु शिव हमको फरमासी ।।

ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, नित् सत् चित् आनन्दराशी ।
जिनके सुमिरत कट जाती है, कठिन काल यमकी फांसी ।।

नाम निरंतर त्रिशूल धर का, प्रेम सहित जो नर गासी ।
दूर होय विपदा उस नर की, जन्म जन्म शिवपद पासी ।।

कैलाशी काशी के वासी, अविनाशी मेरी सुध लीजो ।
सेवक जान सदा चरनन को, जीवन सदा कृपा कीजो ।।

तुम शंकर जी सदा दयामय, अवगुण मेरे सब ढकियो ।
सब अपराध क्षमाकर शंकर, किंकर की विनती यह सुनियो ।।

विवरण

जिनके शीश पर गंगा बहती रहती है, जिनकी पत्नी पार्वती जी हैं तथा जो कैलाश पर्वत पर विराजमान रहते हैं एवं नंदी भृंगी नृत्य करते रहते हैं, ऐसे शंकर जी का ध्यान करने से परम सुख की अनुभूति होती है । शीतल हवा धीमी गति से बह रही है, अविनाशी शंकर जी बैठे हुए हैं, गन्धर्व आदि अपने सप्त स्वरों में गान कर रहें हैं, तथा आपके प्रेमी मधुर आवाज में आपकी स्तुति कर रहें हैं ।

जिनकी आवाज से यक्ष-रक्ष और भैरव भी प्रेमाभिभूत होकर डोल रहें हैं और वन के वासी भी अपनी वाणी बोल रहें हैं । कोयल अपने सुन्दर शब्दों में कू-कू की आवाज कर रही है तथा भँवरे गूँज रहें हैं । जहाँ कामधेनु डोल-डोल कर दूध की वर्षा कर रही है । सूर्य की कान्ति के समान इनका कैलाश पर्वत शोभित हो रहा है तथा इनके ललाट पर स्थित चन्द्रमा सोने के समान चमक रहें हैं ।

छहों ऋतुओं के समान सदा सुशोभित रहते हैं तथा प्रकृति इनकी दासी बनी रहती है । ऋषि एवं मुनि सदा इनकी सेवा में लगे रहते हैं तथा इनके गुणों का गान करते रहते हैं । ब्रह्मा,विष्णु आदि इनकी आज्ञा पाने केलिए सदा इन्हें प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते रहते हैं ।

ऋद्धि एवं सिद्धि (लक्ष्मी, ऐश्वर्य) को देने वाले शंकर जी, नित्य सुन्दर मन वाले तथा आनन्द को देने वाले हैं । जिनके गुण गान करने से यम की फाँसी का फंदा भी टूट जाता है, ऐसे त्रिशूलधारी शंकर जी का नाम जो नित्य प्रेम से लेते हैं, उनकी सारी विपत्तियाँ दूर चली जाती हैं तथा वे जन्म-जन्म तक शिव के पद को प्राप्त कर लेता है ।

हे कैलाश पर्वत पर निवास करने वाले अविनाशी शंकर जी ! आप हमारी वन्दना सुनिएगा तथा अपना सेवक समझकर, हमारे जीवन पर सदा कृपा कीजिएगा । हे शंकर जी ! आप तो सदा से दया रखने वाले हो । हमारे सभी अवगुणों को ढ़क दीजिएगा, हमारे सभी गलतियों को क्षमा करके हमारी विनती सुनिएगा ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.